वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संगीत-शिक्षण हेतु विभिन्न संचार माध्यमों के प्रयोग का विश्लेषणात्मक अध्ययन (गायन के विशेष सन्दर्भ में)

दयालबाग ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा से संगीत विषय में

पीएच.डी. की उपाधि हेतु

शोध-प्रबंध की प्रस्तावित-रूपरेखा

शोध निर्देशक:	**शोधार्थी:**
प्रो. रवि कुमार भटनागर	**दीप्ति**
संगीत विभाग	संगीत (गायन)

संगीत-विभाग, कला-संकाय

दयालबाग ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग आगरा- 282005

2022

भूमिका-

भारतीय संगीत के क्षेत्र में यदि शिक्षण-व्यवस्था की ओर दृष्टिपात किया जाए तो यह मूलतः गुरुमुखी विद्या है। भारत में प्राचीन समय से ही संगीत की शिक्षा गुरुमुख से दी जाती थी। गुरुकुल में रहकर गुरुमुख निःसृत वाणी को कठोर अनुशासन, नियमित एवं संयत जीवन व्यतीत करते हुए अनवरत रूप से ग्रहण करते जाना ही शिक्षा का एक मात्र साधन था। संगीत-कला के सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक दोनों पक्षों का संरक्षण-संवर्धन इसी मौखिक परम्परा अथवा गुरुमुख द्वारा दी गई शिक्षा-व्यवस्था द्वारा ही सहस्त्र वर्षों तक होता रहा है, जो आज भी अक्षुण्य है। गुरुमुखी शिक्षा-व्यवस्था ने मध्यकाल तक आते-आते घराना पद्धति के नवीन रूप को धारण किया और सम्पूर्ण संगीत शिक्षा घरानों के दायरों में संचालित होने लगी।

समय बदला, सामाजिक परिस्थितियाँ बदली, साथ ही व्यवस्थाएँ भी बदलती चली गई, जिसके फलस्वरूप शिक्षा-व्यवस्था में बदलाव परिलक्षित होने लगा। संगीत-कला की प्राचीन काल से प्रवाहित गुरु-मुखी शिक्षा-व्यवस्था ने मध्यकाल में घराना-शिक्षण पद्धति का जो कलेवर धारण किया, उसने आधुनिक काल तक आते-आते एक बार पुनः नवीन दृष्टि को अपनाया। समस्त शिक्षा सामूहिक रूप में नियमित समयाविधि, स्थान निर्धारित पाठ्यक्रम के तहत् दी जाने लगी जिसे वर्तमान में विद्यालयीन शिक्षा-पद्धति या औपचारिक शिक्षा-व्यवस्था के रूप में जाना जाता है। शिक्षा-व्यवस्था कोई भी हो किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि भारतीय संगीत की शिक्षा प्राचीन काल से आधुनिक काल तक गुरु के समक्ष उपस्थित होकर शिष्य निर्विघ्न रूप से प्राप्त करता रहा है।

आधुनिक जगत में तकनीकी क्रान्ति के फलस्वरूप हर क्षेत्र में नवीन दृष्टिकोण विकसित होने लगे है, फलतः विद्यालयीन शिक्षण-पद्धति जो कि एक सीमित दायरे, सीमित समय, सीमित पाठ्यक्रम के तहत दी जाती रही है, समय की माँग को देखते हुए इससे भिन्न एक और शिक्षण-पद्धति प्रचार में आई जिसे हम

दूरस्थ शिक्षण-पद्धति या अनौपचारिक शिक्षण-पद्धति के नाम से जानते है, जिसमें संचार माध्यमों के द्वारा शिक्षा दी जाती है।

पृष्ठभूमि-

वर्तमान समय में तकनीकी क्रान्ति के फलस्वरूप संचार माध्यमों के प्रयोग ने समाज के हर क्षेत्र में आमूल-चूल परिवर्तन ला दिया है। इन संचार माध्यमों के प्रयोग 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की परिकल्पना ही साकार कर दी है क्योंकि इनके प्रयोग ने सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में बाँध दिया है। देश की संस्कृति, कला, शिक्षा इत्यादि को विकसित करने व उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने में संचार माध्यमों का प्रयोग लाभप्रद सिद्ध हो रहा है व शिक्षण-पद्धति में भी परिवर्तन आया है। संचार माध्यमों के अन्तर्गत इंटरनेट का प्रयोग शिक्षा के सभी क्षेत्रों में प्रायः हो रहा है, अतः संगीत-शिक्षा इसके प्रभाव से कैसे अछूती रह सकती थी।

संगीत-कला जो कि सीना-ब-सीना तालीम पर आधारित रही है, परन्तु वर्तमान समय की आवश्यकता को देखते हुए इसकी शिक्षण-व्यवस्था में भी 'विभिन्न संचार' माध्यमों से शिक्षण की संभावनाएँ तलाशी जा रही है। इस तारतम्यता में यदि व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए देखे तो वर्तमान समय में इन्टरनेट से बहुत सी वेब साइट्स या माध्यम हैं जैसे- SWAYAM, MOOCS, Youtube, Zoom, Google Meet इत्यादि संचालित है, जिनके माध्यम से विद्यार्थी को ऑनलाइन शिक्षण प्रदान किया जा सकता है एवं विद्यार्थी इन माध्यमों से घर बैठे ही लाभान्वित हो सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षण-व्यवस्था शिक्षा ग्रहण करने का वह संगठित विकल्प है जिसमें व्यक्ति अपने अनुकूल वातावरण, समय व परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता-

यद्यपि वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का काल है, जिसमें वैज्ञानिक क्रान्ति ने नित नवीन आविष्कार कर शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन ला दिया है, परन्तु जैसा कि पूर्व में वर्णित किया जा चुका है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत जो कि सीना-ब-सीना शिक्षण-पद्धति में ही फल-फूल सकता है अथवा ये कहें कि इसकी

शिक्षण गुरुमुखी रूप से ही संभव है। किन्तु वर्तमान समय की माँग व सामाजिक व्यवस्थाओं में आये परिवर्तन को देखते हुए शिक्षा के क्षेत्र में संचार माध्यमों द्वारा ऑनलाइन शिक्षण-व्यवस्था बहुत कारगर साबित हो रही है, इन परिस्थितियों के देखते हुए कतिपय प्रश्नों का उठना स्वाभाविक है, जैसे- ऑनलाइन शिक्षण हेतु वे कौन-कौन से माध्यम (वेब साइट्स) हैं, जिनका उपयोग संगीत के क्रियात्मक पक्ष की शिक्षा हेतु किया जा सकता है, ऑन लाइन शिक्षण-व्यवस्था से किस सीमा तक लाभ हो सकता है, इनके उपयोग से संगीत-शिक्षण में क्या दुष्प्रभाव हो सकते हैं, यदि कतिपय दुष्प्रभाव पड़ते हैं, तो उन्हें किस प्रकार दूर किया जा सकता है, इत्यादि।

यद्यपि ऑनलाइन शिक्षण के विभिन्न माध्यमों से पठनीय सामग्री त्वरित गति से प्राप्त की जा सकती है, शोध कार्यो को गति मिल सकती है, दूर स्थित परिस्थितियों, चित्रों आदि को घर बैठे जाना जा सकता है, किन्तु क्या ऑन लाइन शिक्षण के माध्यम से शास्त्रीय संगीत-शिक्षण में भी लाभ प्राप्त किया जा सकता है, यह भी विचारणीय तथ्य है। इसके अतिरिक्त संगीत के सैद्धान्तिक पक्ष के साथ ही क्रियात्मक पक्ष की भी उसी प्रकार शिक्षा प्राप्त की जा सकती है जैसे- गुरु-मुखी यानि गुरु के सम्मुख उपस्थित रहकर प्राप्त की जाती है। इन बिन्दुओं की जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से शोधकर्त्री ने पत्र. पत्रिकाओं, पुस्तकों व इस दिशा में हो रहे विभिन्न शोध कार्यो पर अपना ध्यान केन्द्रित किया तथा तत्सम्बन्धी जो भी जानकारी प्राप्त हुई उनका विवरण निम्नवत् है : -

(क) शोध-प्रबन्ध-

1. User perception towards effectiveness of online promotional tools ‘kumari Suman’
2. वर्तमान समय में संगीत-शिक्षण का बदलता स्वरूप, सुलोचना।
3. विशिष्ट शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के आत्म-प्रत्यय, आत्म-विश्वास शिक्षण दक्षता एवं भूमिका प्रतिबद्धता पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन, प्रसाद, राजेन्द्र।

4. शास्त्रीय संगीत के प्रचार एवं प्रसार में ऑल इंडिया रेडियो जालन्धर का योगदान, विश्लेषणात्मक अध्ययन, खन्ना, मोनिका।

(ख) लघु शोध प्रबन्ध-

1. इन्टरनेट के माध्यम से तबला शिक्षण की संभवनाएँ, वर्मा अर्चना 2009।

(ग) लघु शोध परियोजना-

1. तबला-शिक्षण के माध्यम के रूप में कैसेट श्रव्य उपकरण तैयार करना, भट्ट डॉ. नलिन, सुंदरम।

(घ) पुस्तकें

1. संगीत शोध संचयन, शर्मा, डॉ. राजेश कुमार, संजय प्रकाशन, 2017।

2. भारतीय संगीत में मीडिया और संस्थानों का योगदान, सिंह, राधिका, संजय प्रकाशन, 2010।

4. उत्तर भारतीय संगीत के विविध आयाम एक समालोचात्मक, मूल्यांकन, गुप्ता, डॉ. शुचि, संजय प्रकाशन, 2019।

5. भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग, गौतम, अनीता, कनिष्क पब्लिशर्स, 2002।

(ड़) पत्र पत्रिकाएँ

1. संगीत मासिक पत्रिका, जून 2020।

2. संगीत मासिक पत्रिका, सितम्बर 2020।

3. संगीत मंजरी, 2020।

(ड़) विभिन्न संचार माध्यम (on line Teaching हेतु)

1. SWAYAM- (Study Webs active-learning Young Aspiring Mind) ये एक ऑनलाइन लर्निंग पोर्टल है। इस पर कक्षा 9 से स्नातकोत्तर तक के बहुत सारे कोर्स उपलब्ध है, और इसमें ऑनलाइन माध्यम से विभिन्न विषयों में शिक्षण संपन्न कराया जाता है।

2. MOOCS- (Massive Open Online Courses) ये वेब आधारित मुफ्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम है जो शिक्षा के क्षेत्र में भौगोलिक रूप से दूरस्थ क्षेत्रों के छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित करता है। यह उच्च शिक्षा कार्यकारी शिक्षा और कर्मचारी विकास के लिए मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

3. Youtube- वर्तमान समय में Youtube एक ऐसा माध्यम है जिसमें कोई भी अपना चैनल बनाकर वीडियो डाल सकता है। संगीत-शिक्षण के लिए भी Youtube एक अत्यन्त उपयोगी है जिसके माध्यम से आज बहुत सुचारू रूप से संगीत शिक्षण हेतु दृश्य-श्रव्य सामग्री प्राप्त की जा सकती है।

4. **राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी-** यह डिजिटल पुस्तकालय है, इसमें पाठ्य पुस्तक निबंध, दृश्य-श्रव्य सामग्री, पुस्तकें, व्याख्यान, उपन्यास तथा अन्य प्रकार की शिक्षण-सामग्री शामिल है। इसमें 200 भाषाओं में 160 स्रोतों की 1.7 करोड़ अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

5. **शोधगंगा-** भारत के शोध-प्रबन्धों के भण्डारण के लिए Inflibnet Center द्वारा स्थापित किया गया था जिसमें सभी शोधार्थी अपने शोध-प्रबन्ध इलैक्ट्रॉनिक रूप में जमा करते है। जिसमें भविष्य के लिए उच्च शिक्षण व शोध की गुणवत्ता बनी रहे और आने वाले शोधार्थी उनकी मदद से अपनी शोध में काम कर सके!

6. Zoom- Zoom Video Communication एक अमेरिका की कान्फ्रेसिंग सेवा कम्पनी है, यह एक दूरवर्ती कान्फ्रेसिंग सेवा प्रदान करता है। जिसमें वीडियो कान्फ्रेसिंग ऑनलाइन मीटिंग चैट, मोबाइल और कम्प्यूटर के सहयोग से जोड़ता है जो कि कोरोना काल में शिक्षण प्रदान करने के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ।

7. Google Meet- Google Meet एक Video Conferencing App है, जिसके माध्यम से एक मीटिंग में 100 से अधिक लोगों को जोड़कर मीटिंग कर सकते हैं। जिसका उपयोग भी वर्तमान शिक्षण में बहुत हो रहा है।

उपर्युक्त वर्णित विभिन्न शोध कार्यों, पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों के अध्ययन से शोधार्थी के संज्ञान में आयी जानकारी के आधार पर यह स्पष्ट है कि यद्यपि वर्तमान समय में विभिन्न संचार माध्यमों, से संगीत शिक्षण-पद्धति से सम्बन्धित बहुत से शोधकार्य, किये जा चुके है, जैसे- संगीत-शिक्षा के बदलते स्वरूप, संगीत शिक्षा हेतु दूरस्थ व्यवस्था को पुष्ट करने हेतु दृश्य श्रव्य-सामग्री की उपयोगिता रेडियो व टी.वी के माध्यम से संगीत का प्रचार-प्रसार अथवा शोध गंगा, गूगल क्लास रूम या इन्टरनेट में निहित अनगिनत कलाकारों की वीडियो रिकॉर्डिंग से सम्बन्धित वेबसाइट्स को संचालित कर कक्षा में सुनवाकर या विद्यार्थियों को मोबाइल द्वारा उपलब्ध करवा कर प्रशिक्षण इत्यादि, तथापि इन्टरनेट के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत (गायन) में ऑन लाइन शिक्षण की संभावनाओं से सम्बन्धित अब तक कोई शोधकार्य नहीं किया गया है एवं इससे सम्बन्धित किन्चित मात्र ही जानकारी उपलब्ध है, अस्तु, संगीत हेतु ऑनलाइन शिक्षण के क्षेत्र में सार्थक पहल को दृष्टिगत रखते हुए ही शोधकर्त्री ने निम्नलिखित शोध-विषय का चयन किया है-

विषय कथन-

''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संगीत-शिक्षण हेतु विभिन्न संचार माध्यमों के प्रयोग का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

(गायन के विशेष सन्दर्भ में)

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या-

1. परिप्रेक्ष्य-

देखने अथवा सोचने की दृष्टि विशेष। basarkar.com

किसी वस्तु को देखने या किसी विषय पर विचार करने की वृत्ति या ढंग। शब्द कोश

किसी विषय, घटना या बात के विभिन्न पक्ष। hindi2dictionary.com

2. विश्लेषणात्मक-

वि. (सं. विश्लेषण + आत्मक) (विचार या निश्चय) जो विश्लेषणवादी प्रक्रिया के अनुसार हो।

हिन्दी खोज

3. संचार-

वह जो लोगों और समूहों के बीच संप्रेषित होता है। शब्द कोष

सूचना आदान-प्रदान। basarkar.com

4. संचार माध्यम-

व्यापक रूप से जनता तक संदेश पहुँचाने के लिए प्रयुक्त साधन। basarkar.com

5. गायन-

गाने की क्रिया या भाव को हम गायन कहते है। hindi2dictionary.com

गायन एक ऐसी क्रिया है, जिसमें स्वर की सहायता से संगीतमय ध्वनि उत्पन्न की जाती है।

Wikipedia

अध्ययन के उद्देश्य -

(1) भारतीय संगीत व उसकी शिक्षण-पद्धतियों का अध्ययन करना।

(2) संगीत शिक्षण में सहायक विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों का अध्ययन करना।

(3) इन्टरनेट का सामान्य अध्ययन करना।

(4) ऑनलाइन शिक्षण का परिचयात्मक अध्ययन करना।

(5) ऑनलाइन संगीत शिक्षण में सहायक विभिन्न वेबसाइट्स की जानकारी प्राप्त करना।

(6) गायन विधा हेतु ऑनलाइन शिक्षण की संभावनाएँ खोजना।

(7) गायन विधा में ऑनलाइन शिक्षण के क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें दूर करने के उपाय खोजना।

अध्ययन के स्रोत -

तथ्यों का संकलन पुस्तक, पत्र-पत्रिकाओं, कलाकारों, शिक्षकों व विद्वानों से प्राप्त साक्षात्कार के साथ ही इन्टरनेट पर उपलब्ध पाठ्य-सामग्री के द्वारा किया जायेगा।

अध्ययन की विधि-

साक्षात्कार, सर्वेक्षणात्मक तथा वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक विधि।

अध्ययन के उपकरण-

दृश्य-श्रव्य सामग्री विशेषकर कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाइल, लैपटॉप इत्यादि।

परिसीमांकन-

कार्य एवं समय सीमा को देखते हुए शोध को संगीत-गायन के शिक्षण में सहायक विभिन्न संचार-माध्यमों में से केवल ऑनलाइन शिक्षण विधि तक ही परिसीमित किया जाएगा।

अध्यायों का विभाजन-

भूमिका एवं सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण

प्रथम अध्याय -

संगीत-शिक्षण का संक्षिप्त इतिहास (प्राचीन काल से वर्तमान तक)

द्वितीय अध्याय - संगीत के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रगति

तृतीय अध्याय -

विभिन्न संचार माध्यम एवं उनका संगीत में प्रयुक्तिकरण।

चतुर्थ अध्याय -

संगीत-गायन विद्या एवं ऑनलाइन-शिक्षण: विभिन्न समन्वयात्मक अभिकल्प।

पंचम अध्याय -

ऑनलाइन संगीत-गायन विधा एवं ऑनलाइन-शिक्षण: समस्या एवं निदान।

निष्कर्ष-

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, डॉ. राजेश संगीत शोध संचयन, संजय प्रकाशन 2017।

2. गौतम, अनीता, भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग, कनिष्क पब्लिशर्स, 2002

3. कुमार, डॉ. नरेश, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग एवं परिवर्तन, कनिष्क पब्लिशर्स 2013

4. बाला, महेन्द्र नीलम, आधुनिक अन्तराष्ट्रीकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, कनिष्क पब्लिशर्स, 2011

5. शुचि डॉ. स्मिता, आकाशवाणी एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2006

6. शुक्ला डॉ. गौरव, संगीत मंजरी, श्री विनायक पब्लिकेशन, आगरा 2020

7. कुमार अशोक, संगीत और संवाद, कनिष्क पब्लिशर्स, 2017

8. सिंह राधिका, भारतीय संगीत में मीडिया और संस्थानों का योगदान, संजय प्रकाशन 2010

9. Wikipedia